25वें सरसों विज्ञान मेले का हुआ आयोजन

मनोज शर्मा

भरतपुर, (पंजाब केसरी): अनुसंधान से उन्नत किस्मों एवं तकनीको का विकास कर लिया गया है। किसानों को उन अनुसंधानों का लाभ उठाकर उत्पादन को बढ़ाना चाहिए। किसानों की आमदनी बढ़ने से ही देश के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को गति मिलेगी।

प्रधानमंत्री की आशाओं के अनुरूप हमें किसानों की आय दुगुनी करने के लिए अनुसंधान केन्द्रों, कृषि विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, गैर सरकारी संगठनों एवं सभी संस्थाओं में बेहतर तालमेल बनाकर किसानों को उन्नत तकनीकों के बारे में जागरूक करना होगा।

यह बात गुरुवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय के 25 वें

मेले का फीता काटकर शुभारंभ करते एवं तकनीकी प्रसार पत्रकों का विमोचन करते अतिथिगण।

सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि कृषि विशेषज्ञ डॉ. केपी सिंह ने कही।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. एसके दलाल, नेशनल कंसलटेन्ट, ऑयल सीड डिविजन, कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार ने विश्व एवं देश में तिलहन उत्पादन, क्षेत्रफल एवं उत्पादकता कि स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश की खाद्य तेलों की मांग को पूरा करने के लिए तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना पहली प्राथमिकता है। खाद्यान्नों की तरह तिलहनों एवं दलहनों में आत्मनिर्भर होने पर देश के कृषि विकास को गति मिलेगी। इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने कहा कि राई-सरसों फसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में एक विषेश स्थान है। देश में वैज्ञानिकों की ओर से विकसित उन्नत किस्मों एवं तकनीकों को किसानों की ओर से अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है। खेती के लिए कई उपयोगी कृषि उपकरणों का विकास किया गया है, लेकिन छोटे किसान उनका उपयोग नहीं कर पा रहे हैं।

इस अवसर पर अतिथियों की ओर से पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का भी विमोचन किया गया राई-सरसों के शोध एवं उन्नत तकनीकों के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने एवं सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेताओं किसानों को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया। मेले में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान से कृषि कार्यकर्ताओं सहित करीब 2000 किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम का सम्पूर्ण संचालन प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पंकज शर्मा ने किया।

विज्ञान मेला • किसानों को उन्नत तकनीकों की दी जानकारी, खाद्य तेलों की मांग की पूर्ति के लिए राई, सरसों का उत्पादन बढ़ाने पर दिया जोर

अधिक आय के लिए किसानों को कृषि प्रबंधन अपनाना होगा: सिंह

भास्कर संवाददाता | भरतपुर

अनुसंधानों द्वारा कई उन्नत किस्मों एवं तकनीकों का विकास कर लिया गया है, किसानों को उन अनुसंधानों का लाभ उठाकर कृषि उत्पादन को बढ़ाना चाहिए। यह बात सरसों अनुसंधान निदेशालय के 25 वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि कृषि विशेषज्ञ डॉ. केपी सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि किसानों की आय दुगुनी करने के लिए अनुसंधान केन्द्रों, कृषि विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, गैर सरकारी संगठनों एवं सभी संस्थाओं में बेहतर तालमेल बनाकर किसानों को उन्नत तकनीकों के बारे में जागरूक करना है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. एसके दलाल ने देश में तिलहन उत्पादन, क्षेत्रफल एवं उत्पादकता कि स्थिति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि खाद्य तेलों की मांग की पूर्ति करने के लिए राई-सरसों का उत्पादन बढ़ाना होगा। राई-सरसों महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है और इसकी उत्पादन क्षमता अपार है। विशिष्ट अतिथि रांची कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व प्रसार निदेशक डॉ. आरपी सिंह रतन ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने में तकनीकी विकास का बहुत बड़ा योगदान है। किसान एवं वैज्ञानिकों को मिलकर अनुसंधान की दिशा तय करनी चाहिए।उन्होंने कहा कि आमदनी बढ़ाने के लिए फसल उत्पादन के साथ-साथ सब्जी उत्पादन एवं पशुपालन को अपनाने की आवश्यकता है। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक देशराज सिंह ने कहा कि अधिकतर किसान छोटी जोत वाले हैं, जिनके पास साधनों की कमी है। किसानों को कृषि से टिकाऊ आजीविका प्राप्त करने के लिए परंपरागत कृषि के साथ एकीकृत कृषि प्रबंधन को अपनाना होगा।

उन्नत जानकारी को लगाई प्रदर्शनी

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के विभिन्न अनुभागों एवं सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं की और से कृषि एवं सरसों की खेती की उन्नत जानकारी हेतु प्रदर्शनियां भी लगाई गईं। प्रदर्शनी मे, सरकारी वर्ग में, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, कृषि विज्ञान केन्द्र बानसूर एवं केन्द्रीय बकरी अनुसंधान, मथुरा एवं गैर-सरकारी वर्ग में जसोरिया बीज भंडार, श्री राम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स एवं ल्युपिन फाउन्डेशन को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया। संचालन प्रधान वैज्ञानिक डॉ.. पंकज शर्मा ने किया।

भरतपुर. सरसों मेले में उपस्थित लोग।

पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का किया विमोचन

इस अवसर पर अतिथियों द्वारा पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का भी विमोचन किया गया। राई-सरसों के शोध एवं उन्नत तकनीकों के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने एवं सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेताओं किसानों को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया।

सरसों विज्ञान मेला

किसान नवीन तकनीक अपनाकर उत्पादन बढ़ाएं

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

भरतपुर. अनुसंधानों से कई उन्नत किस्मों एवं तकनीकों का विकास कर लिया गया है। किसानों को उन अनुसंधानों का लाभ उठाकर कृषि उत्पादन को बढ़ाना चाहिए। सरसों अनुसंघान निदेशालय के 25 वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि कृषि विषेशज्ञ डॉ. के. पी. सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए कही। विशिष्ट अतिथि डॉ. एस. के. दलाल, नेशनल कंसलटेन्ट, ऑयल सीड डिविजन, कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार ने विश्व एवं देश में तिलहन उत्पादन, क्षेत्रफल एवं उत्पादकता कि स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश की खाद्य तेलों की मांग को पूरा करने के लिए तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना पहली प्राथमिकता है। डॉ. आर. पी. सिंह रतन, पूर्व प्रसार निदेशक, विरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची ने कहा कि किसानों की आय बढ़ानें में तकनीकी विकास का बहुत बड़ा योगदान है। किसान एवं वैज्ञानिकों को मिलकर अनुसंधान की दिशा तय करनी चाहिए। निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि राई-सरसों शसल का भारतीय आर्थिक व्यवस्था में विशेष स्थान है। देश में वैज्ञानिकों ने विकसित उन्नत किस्मों एवं तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाकर तिलहनों में भी आत्मनिर्भरता प्राप्त करना संभव है। कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक देशराज सिंह ने कहा कि अधिकतर किसान छोटी जोत वाले हैं इनके पास साधनों की कमी है। परियोजना निदेशक आत्मा भरतपुर योगेश शर्मा, कृषि महाविद्यालय कुम्हेर भरतपुर के अधिष्ठता डॉ. अमर सिंह, कृषि उप अनुसंधान केन्द्र के प्रभारी डॉ. उदयभान सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। अतिथियों ने राई-सरसों के शोध एवं उन्नत तकनीकों के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने एवं सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेताओं किसानों को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया। इस अवसर पर लगाई गई प्रदर्शनी में सरकारी वर्ग में, केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर, कृषि विज्ञान केन्द्र बानसूर एवं केन्द्रीय बकरी अनुसंधान मथुरा एवं गैर-सरकारी वर्ग में जसोरिया बीज भण्डार, श्री राम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स एवं लुपिन को क्रमश प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार प्रदान करके सम्मानित किया गया। मेले में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान से कृषि कार्यकर्ताओं सहित करीब 2000 किसानों ने भाग लिया। संचालन प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पंकज शर्मा ने किया।

भरतपुर. विज्ञान मेले में दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ करते अतिथि।

'किसानों को अनुसंधानों का लाभ उठाकर कृषि उत्पादन को बढ़ाना चाहिए'

■ सरसों अनुसंधान निदेशालय ने सरसों विज्ञान मेला लगाया

भरतपुर, (निसं)। अनुसंधानों द्वारा कई उन्नत किस्मों एवं तकनीकों का विकास कर लिया गया है। किसानों को उन अनुसंधानों का लाभ उठाकर कृषि उत्पादन को बढ़ाना चाहिए। किसानों की आमदनी बढ़ने से ही देश के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास को गति मिलेगी। प्रधानमंत्री की आशाओं के अनुरूप हमें किसानों की आय दुगुनी करने के लिए अनुसंधान केन्द्रों, कृषि विभागों, कृषि विज्ञान केन्द्रों, गैर सरकारी संगठनों एवं सभी संस्थाओं में बेहतर तालमेल बनाकर किसानों को उन्नत तकनीकों के बारे में जागरूक करना और उन्हें सही प्रशिक्षण देने से ही कृषि की प्रगति संभव है। यह बात आज सरसों अनुसंधान निदेशालय के 25 वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि देश के कृषि विशेषज्ञ डॉ. के. पी. सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुये कही।

भरतपुर में सरसों अनुसंधान निदेशालय के 25 वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि देश के कृषि विशेषज्ञ डॉ. के. पी. सिंह ने किसानों को संबोधित किया।

उन्होनें कहा कि तिलहनी फसलों में सरसों एक मुख्य फसल है। अच्छी तरह से नवीन तकनीकों को अपनाकर सरसों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। मिट्टी के स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए फसलचक्र एवं गोबर की खाद एवं सूक्ष्म जीवों की क्रियाशीलता को बनाए रखना आवश्यक है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. एस. के. दलाल, नेशनल कंसलटेन्ट, ऑयल सीड डिविजन, कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग भारत सरकार ने विश्व एवं देश में तिलहन उत्पादन, क्षेत्रफल एवं उत्पादकता कि स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि देश की खाद्य तेलों की मांग को पूरा करने के लिए तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना पहली प्राथमिकता है। खाद्यान्नों की तरह तिलहनों एवं दलहनों में आत्मनिर्भर होने पर देश के कृषि विकास को गति मिलेगी। खाद्य तेलों की मांग की पूर्ति करने के लिए राई-सरसों का उत्पादन बढाना होगा। उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि निदेशालय द्वारा विकसित किस्में जो अधिक उत्पादन दे रही है उनका उपयोग करें। किसानों को वैज्ञानिकों की सलाह का अनुसरण करना चाहिए। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डॉ. आर. पी. सिंह रतन, पूर्व प्रसार निदेशक, विरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने में तकनीकी विकास का बहुत बड़ा योगदान है। किसान एवं वैज्ञानिकों को मिलकर अनुसंधान की दिशा तय करनी चाहिए।

इस अवसर पर अतिथियों द्वारा पांच तकनीकी प्रसार पत्रकों का भी विमोचन किया गया राई-सरसों के शोध एवं उन्नत तकनीकों के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने एवं सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेताओं किसानों को प्रशस्ति पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के विभिन्न अनुभागों एवं सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं की ओर से कृषि एवं सरसों की खेती की उन्नत जानकारी देने के लिए प्रदर्शनियां भी लगाई गईं। मेले में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश एवं राजस्थान से कृषि कार्यकर्ताओं सहित करीब 2000 किसानों ने भाग लिया।